मगधनरेश
वैदेहीपुत्र अजातशत्रु
(वैदेहिपुत्त अजातसत्तु)

विपश्यना विशोधन विन्यास

मगधनरेश
वैदेहीपुत्र अजातशत्रु

(वेदेहिपुत्त अजातसत्तु)

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी

H93 अजातशत्रु

© विपश्यना विशोधन विन्यास
सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण : मई २०१७

मूल्यः रु. ४०.००

ISBN 978-81-7414-393-8

प्रकाशकः
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - ४२२ ४०३
जिला- नाशिक, महाराष्ट्र
फोनः ०२५५३-२४४९९८, २४४०७६,
२४४०८६, २४४१४४, २४४४४०
Email: vri_admin@vridhamma
Website: www.vridhamma.org

मुद्रकः
अपोलो प्रिंटिंग प्रेस
जी-२५९, सीकॉफ लिमिटेड, ६९ एम. आय. डी. सी.,
सातपुर, नाशिक-४२२००७, महाराष्ट्र

मगधनरेश

वैदेहीपुत्र अजातशत्रु

विषयानुक्रमणिका

प्रकाशकीय ५

अद्भुत जन्म ९

अजन्मा शत्रु ९

अजातशत्रु का जन्म ९

देवदत्त का जाल ११

पुत्र से सचेत रहने की सीख ११

कुमार पर देवदत्त का जाल ११

पितृ-हंता १२

पिता के स्नेह की अनुभूति १४

भाई सीलवा की हत्या का षड्यंत्र १५

दुरभिसंधि १६

बुद्ध की हत्या हेतु राजपुरुषों की नियुक्ति १६

शास्ता पर शिला प्रहार १८

नालागिरि नाग प्रसंग २०

तथागत का अकाल परिनिर्वाण संभव नहीं २१

अजातशत्रु द्वारा देवदत्त का बहिष्कार २२

तप उन्नति का मूल २४

तपना सीखो २४

वज्जियों को सात अपरिहानीय धर्मों का उपदेश २४

भिक्षुओं को सात अपरिहानीय धर्मों का उपदेश २७

धम्म सेट्ठी (श्रेष्ठी) ३०

जोतिक-महल ३०

अनासक्त जोतिक.....३२

शांतचित्त को सुख-चैन ३४

शांतचित्त सुख से सोता है ३४

अकुशल का त्याग और कुशल का अभ्यास ३४

चैन की नींद.....३५

विविध प्रकरण ३७

भेद-नीति सफल हुई.....३८

मामा का अंतिम संस्कार ३९

पांच हस्तिबल-युक्त ३९

कल्याण-मित्र की संगत ४१

अजातशत्रु द्वारा बुद्ध के दर्शन ४१

बुद्धं सरणं गच्छामि ४३

क्षमायाचना ४६

अजातशत्रु का आह्लाद ४७

वास्तविक श्रामण्यफल से वंचित.....४८

भगवान की धातु-सुरक्षा ४९

शोक संतप्त अजातशत्रु ४९

तथागत का पार्थिव शरीर ५०

प्रथम धम्म संगीति.....५१

धातुनिधान की प्रतिष्ठा.....५२

विपश्यना साधना केंद्र..... ५८

प्रकाशकीय

जन्म ग्रहण करने के पूर्व ही वह अपने पिता का शत्रु घोषित कर दिया गया इसलिए उसका नाम पड़ा 'अजातशत्रु'। वह मगधनरेश और कोशलदेवी का पुत्र था। कोशलदेवी कोशलराज प्रसेनजित की बहन थी। यह जानने पर कि मेरे गर्भ से जन्मा पुत्र राजा का हन्ता होगा, रानी ने उसे गिराने का प्रयास किया, पर महाराज ने उन पर पहरा बैठा दिया एक अवसर पर भगवान द्वारा सचेत करने पर राजा ने तनिक भी ध्यान नहीं दिया।

बुद्ध के प्रति देवदत्त का शत्रुभाव पहले से ही था, पर उपासकों द्वारा उनका लाभ सत्कार देखकर उसकी ईष्याग्नि और प्रज्वलित हो गयी। आध्यात्मिक प्रगति की ओर न जाकर उसने लोकीय समाधि द्वारा ऋद्धियां प्राप्त की और अपने चमत्कार से अजातशत्रु को अपने वश में कर लिया। उसे समझाया कि तुम्हारे पिता बहुत दिन तक जीवित रहेंगे इसलिए तुम्हें बहुत कम दिनों के लिए राज-सुख प्राप्त होगा। उनकी हत्या करके अभी राज्य हथिया लो। अजातशत्रु ने एक रात ऐसा प्रयास किया पर सफल नहीं रहा। तब देवदत्त की प्रेरणा से वैदेहीपुत्र अजातशत्रु ने पिता को कारावास में डाल दिया। वहां क्रमशः उसका भोजन-पानी बंद करा कर नाइयों द्वारा उसकी पगथली चिरवा उसमें नमक भर आग से जलाकर मरवा दिया।

अजातशत्रु के राजसिंहासन प्राप्त करने पर देवदत्त ने अपनी मनोकामना उसे बतायी। वह बुद्ध को मरवा कर संघ का प्रमुख बनना चाहता था इसके लिए राजा अजातशत्रु ने उसका सहयोग किया। बुद्ध को मारने के लिए राजा द्वारा दिये गये इकतीस सैनिक बुद्ध के आनुभाव से उनके शिष्य बन गये। देवदत्त को पांच हाथियों का बल था। स्वयं बुद्ध को मारने के लिए एक दिन उसने गृद्धकूट पर्वत से विशाल शिलाखंड लुढ़काया। वह तो बीच में ही रुक गया पर उसकी एक पपड़ी लगने से बुद्ध का पैर घायल हो गया। इसमें भी असफल होने पर उसने पागल नालागिरि हाथी को बुद्ध को मारने के लिए फ़ीलबानों

द्वारा छुड़वाया, पर बुद्ध के पास पहुंचते-पहुंचते उनकी शीतल मैत्री तरंगों से वह शांत हो उनकी चरणरज अपने सिर पर रखी। बुद्ध किसी के द्वारा मारे नहीं जा सकते नालागिरि कांड से देवदत्त का भेद खुल गया, प्रजा उग्र हो उठी इसलिए राजा अजातशत्रु ने लाभ-सत्कार देना बंद कर दिया। देवदत्त अब भीख मांगकर अपना और साथियों का पेट पालता।

महाराज अजातशत्रु समृद्ध वैशाली को अपने राज में मिलाना चाहता था पर बुद्ध के सिखाये सात अपरिहानीय धर्मों का पालन करने वाले वज्जियों को कोई जीत नहीं सकता था। इसी तरह भगवान ने भिक्षुओं को सात अपरिहानीय धर्म सिखाये जिनका पालन करने से संघ की उन्नति ही होगी, अवनति नहीं। बचपन में जोतिक श्रेष्ठी के महल को देखकर राजा बनने पर उसे जीतने का अजातशत्रु ने प्रयास किया पर सफल नहीं हुआ। मामा महाराज प्रसेनजित के साथ उसके सेनापति द्वारा छल किये जाने पर मगध आते हुए रास्ते में उनकी मृत्यु हो गयी। वैदेहीपुत्र अजातशत्रु ने उनका अंतिम संस्कार किया।

भगवान के दर्शन के लिए जेतवन जाते समय देवदत्त जमीन सें समा गया। इस समाचार से पिता के प्रति किये गये कुकृत्यों को सोच राजा अजातशत्रु व्याकुल और बेचैन रहने लगा। उसके कहने पर राजवैद्य जीवक उसे भगवान के पास ले गये। वहां की शांति भंग परिवेश से राजा अत्यंत प्रभावित हुआ और वैसी ही शांति की कामना अपने पुत्र के लिए की। भगवान और संघ को अभिवादन कर वह एक ओर बैठ गया। उसके प्रश्न करने पर भगवान ने श्रामण्य के लौकिक लाभ और पारलौकिक हित के बारे में अच्छी तरह समझाया। पिता की हत्या करने के पाप के लिए उसने भगवान से क्षमा मांगी। भगवान की पुण्य संपत्ति देख वह पुलकित और रोमांचित हो गया। उसके जाने पर भगवान ने भिक्षुओं से कहा– यदि वैदेहीपुत्र ने अपने पिता की हत्या का पाप नहीं किया होता तो इसी आसन पर वह स्रोतापत्ति फल को प्राप्त होता।

कुसीनारा में भगवान के महापरिनिर्वाण का समाचार सुनकर राजा शोकग्रस्त और बेहोश हो जाता। अमात्यों के समझाने पर वह शांत हुआ। फिर ससेन्य कुशीनारा पहुंच कर उसने भगवान की अस्थि अवशेष लाने का निश्चय किया। वहां एकत्र आठ राजाओं में भगवान की अस्थि धातु बँटी। वैदेहीपुत्र ने भगवान के अस्थि-धातु पर एक भव्य चैत्य का

निर्माण किया। स्थविरों के कहने पर राजा ने पुराने विहारों की मरम्मत करायी। उसके बाद धर्म संगीति के लिए सप्तपर्णी गुफा में व्यवस्था की। इतना ही नहीं स्थविर महाकश्यप के परामर्श से वैदेहीपुत्र ने राजधानी में धातुनिधान भी बनवाया ताकि भगवान की धातु पूरी तरह सुरक्षित रहे।

विपश्यना विशोधन विन्यास